



विविधता से भरपूर भौगोलिक संकेतक फल

प्रकाश पाटिल¹, भूपेन्द्र सागोरे², बृजेश कुमार यादव³ और वाणी एन. यू.⁴

भारत अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं जैविक विविधता के कारण विश्व में विशिष्ट स्थान रखता है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादित फल अपनी अनूठी गुणवत्ता, स्वाद, सुगंध एवं पारंपरिक खेती पद्धतियों के कारण अलग पहचान बनाते हैं। भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग ऐसे विशिष्ट फलों की मौलिकता, क्षेत्रीय विरासत और किसानों के अधिकारों के संरक्षण का प्रभावी माध्यम है। प्रस्तुत लेख में भारत के जीआई टैग प्राप्त फलों की विशेषताओं, उत्पादन क्षेत्रों, पारंपरिक एवं वैज्ञानिक खेती तकनीकों तथा उनके सामाजिक-आर्थिक महत्व का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, इन फलों की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बढ़ती मांग, निर्यात क्षमता, ब्रांड मूल्य और किसानों की आय बढ़ाने में उनकी भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। लेख में सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं, विपणन, प्रसंस्करण तथा संरक्षण से जुड़ी चुनौतियों एवं संभावनाओं का भी उल्लेख किया गया है। यह अध्ययन भारतीय जीआई फलों की समृद्ध विरासत को उजागर करते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने तथा “वोकल फॉर लोकल” और “आत्मनिर्भर भारत” की अवधारणा को मजबूती प्रदान करता है।

भौगोलिक संकेतक (जीआई) किसी विशेष क्षेत्र में उत्पन्न उत्पादों की

विशिष्ट गुणवत्ता, प्रतिष्ठा एवं पहचान को संरक्षण प्रदान करता है। फलों के संदर्भ में यह उनकी मौलिकता, स्वाद, सुगंध, रंग तथा पोषण संबंधी विशेषताओं को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी फल की गुणवत्ता उस क्षेत्र की जलवायु, मृदा एवं पारंपरिक कृषि पद्धतियों से जुड़ी होती है। उदाहरणस्वरूप, महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र का अल्फांसो आम अपनी विशिष्ट मिठास और स्वाद के लिए प्रसिद्ध है।

जीआई टैग प्राप्त फल राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी मांग, ब्रांड वैल्यू और बाजार मूल्य में वृद्धि होती है। इससे किसानों को बेहतर आर्थिक लाभ मिलता है तथा नकली उत्पादों पर नियंत्रण संभव होता है। वित्त वर्ष 2024-25 में भारत के ताजे फलों के निर्यात मूल्य में 18% से अधिक वृद्धि दर्ज की गई और निर्यात ₹9,977 करोड़ तक पहुँच गया। वर्तमान में भारतीय ताजे फल

¹परियोजना समन्वयक (फल), ²वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता, परियोजना समन्वयक (फल) कार्यालय, भाकृअनुप-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु, कर्नाटक, ³सहायक संचालक उद्यानिकी, जिला भिण्ड, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, भोपाल, मध्य प्रदेश, ⁴पीएच.डी. शोधार्थी, खाद्य विज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी संभाग, भाकृअनुप-भाकृअनुसं, नई दिल्ली

फलों में जीआई टैग का महत्व

भौगोलिक संकेतक (जीआई) एक कानूनी प्रावधान है, जो किसी विशेष क्षेत्र से उत्पन्न उत्पादों की विशिष्ट गुणवत्ता, प्रतिष्ठा एवं विशेषताओं को संरक्षण प्रदान करता है। यह प्रमाणित करता है कि उत्पाद की पहचान उसके भौगोलिक मूल स्थान से जुड़ी हुई है। भारत में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग जीआई प्रणाली के संचालन एवं निगरानी के लिए नोडल संस्था के रूप में कार्य करता है। भारत, विश्व का दूसरा सबसे बड़ा फल उत्पादक देश है, जहाँ विविध कृषि जलवायु परिस्थितियों में उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय एवं समशीतोष्ण फलों की अनेक प्रजातियाँ उगाई जाती हैं। भारतीय फल अपने विशिष्ट स्वाद, गुणवत्ता एवं पोषणात्मक गुणों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। इनमें विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सीडेंट एवं आहार रेशे प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो पोषण सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फलों के संदर्भ में जीआई का विशेष महत्व है, क्योंकि यह उत्पाद की विशिष्ट पहचान को सुरक्षित रखने के साथ किसानों की आय वृद्धि, पारंपरिक कृषि पद्धतियों के संरक्षण एवं ग्रामीण विकास को भी प्रोत्साहित करता है। दशहरी आम, अल्फांसो आम, नागपुर संतरा एवं किन्नौर सेब जैसे कई भारतीय फल जीआई टैग प्राप्त कर वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान बना चुके हैं।



देवगढ़ अल्फांसो

रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन फलों का उत्पादन सामान्यतः उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहाँ की जलवायु, मिट्टी, तापमान एवं वर्षा की परिस्थितियाँ उनके विकास के लिए अनुकूल होती हैं। यही प्राकृतिक कारक फलों के स्वाद, रंग, आकार, सुगंध एवं पोषण गुणों को विशिष्ट बनाते हैं।

जीआई फलों की खेती में स्थानीय किस्मों का चयन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि ये किस्में क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित होती हैं तथा रोग एवं

कीटों के प्रति अधिक सहनशील होती हैं। इनके उपयोग से जैव विविधता संरक्षण एवं पारंपरिक फल प्रजातियों की सुरक्षा भी संभव होती है। इन फलों के उत्पादन में पारंपरिक कृषि पद्धतियों, स्थानीय ज्ञान एवं अनुभव का व्यापक उपयोग किया जाता है। साथ ही, सतत एवं जैविक कृषि पद्धतियों को भी प्रोत्साहन दिया जाता है, जिनमें जैविक खाद, कम्पोस्ट, फसल चक्र तथा प्राकृतिक कीट नियंत्रण उपाय शामिल हैं। इससे पर्यावरण संरक्षण एवं सुरक्षित खाद्य उत्पादन सुनिश्चित होता है।

भारत में भौगोलिक संकेतक प्राप्त फलों की वर्तमान स्थिति

भारत में भौगोलिक संकेतक (जीआई) प्राप्त फलों की स्थिति निरंतर सुदृढ़ हो रही है। देश में पंजीकृत लगभग 508 जीआई उत्पादों में से करीब 152 कृषि एवं खाद्य उत्पादों की श्रेणी में आते हैं, जिनमें लगभग 48 उत्पाद फलों से संबंधित हैं। जीआई किसी उत्पाद की विशिष्टता, गुणवत्ता, क्षेत्रीय पहचान एवं बाजार प्रतिष्ठा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में सर्वाधिक जीआई उत्पाद वाले राज्यों में कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश एवं केरल प्रमुख हैं। इन राज्यों ने अपनी पारंपरिक कृषि प्रणाली एवं विशिष्ट उत्पादों के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान बनाई है। कृषि क्षेत्र में लगभग 185 उत्पादों को जीआई प्राप्त हो चुका है, जिनमें फल, मसाले, चाय, कॉफी एवं अन्य उद्यानिकी उत्पाद शामिल हैं। कृषि एवं प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) जीआई उत्पादों के प्रचार-प्रसार, गुणवत्ता नियंत्रण एवं निर्यात संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान में लगभग 48 फलों एवं 26 सब्जियों को जीआई संरक्षण प्राप्त है। उद्यानिकी फसलों में जीआई उत्पादों का योगदान 75 प्रतिशत से अधिक है, जिनमें फलों की हिस्सेदारी लगभग 43 प्रतिशत है। कर्नाटक के अप्पेमिडी आम, नंजनगुड केला, आंध्र प्रदेश के बंगनपल्ली आम तथा पश्चिम बंगाल के हिमसागर और लक्ष्मण भोग आम जैसे फलों को विशेष पहचान प्राप्त हुई है। उत्तर-पूर्वी भारत में तेजपुर लीची एवं त्रिपुरा क्वीन अनन्नास जैसे उत्पाद भी जीआई श्रेणी में शामिल हैं, जबकि मिजो केला, असम नीबू एवं पैशन फ्रूट जैसे कई उत्पाद भविष्य के संभावित जीआई उत्पाद माने जा रहे हैं।

85 देशों में निर्यात किए जा रहे हैं। हाल ही में नंजनगुड रसबाले केला तथा खासी संतरा जैसे जीआई फलों का निर्यात भी बढ़ा है।

भौगोलिक संकेतक पारंपरिक कृषि ज्ञान, स्थानीय खेती पद्धतियों एवं जैव विविधता के संरक्षण में भी सहायक हैं। यह उपभोक्ताओं को वास्तविक एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पाद की पहचान सुनिश्चित करता है तथा सतत कृषि, ग्रामीण विकास, कृषि पर्यटन और रोजगार सृजन को बढ़ावा देकर किसानों की आय संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

खेती एवं कृषि पद्धतियाँ

भौगोलिक संकेतक (जीआई) प्राप्त फलों की खेती उनकी विशिष्ट पहचान, गुणवत्ता एवं क्षेत्रीय विशेषताओं को बनाए



नागपुर संतरा

फलों की उचित परिपक्व अवस्था में कटाई, कटाई उपरांत प्रबंधन, छंटाई, पैकेजिंग एवं शीत भंडारण उनकी गुणवत्ता बनाए रखने में महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, गुणवत्ता नियंत्रण, प्रयोगशाला परीक्षण एवं अनुरेखण प्रणाली उत्पाद की प्रामाणिकता और उपभोक्ता विश्वास को सुदृढ़ करते हैं। जीआई फलों की खेती जैव विविधता संरक्षण, ग्रामीण रोजगार, किसानों की आय वृद्धि एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

अवसर एवं निर्यात

भारत में भौगोलिक संकेतक (जीआई) व्यवस्था ने विशिष्ट कृषि उत्पादों, विशेषकर फलों के लिए नए बाजार अवसर एवं निर्यात



नंजनगुड रसबाले केला

संभावनाएँ विकसित की हैं। जीआई उत्पाद अपनी गुणवत्ता, विशिष्टता और विश्वसनीयता के कारण घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में

अलग पहचान बनाते हैं। इससे उत्पादों की मांग, व्यावसायिक मूल्य और बाजार प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

सरकारी प्रयास एवं नीतियाँ

भौगोलिक संकेतक (जीआई) बौद्धिक संपदा अधिकारों का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है, जिसका उद्देश्य उन उत्पादों की सुरक्षा करना है जिनकी विशिष्ट गुणवत्ता, प्रतिष्ठा एवं पहचान उनके भौगोलिक क्षेत्र से जुड़ी होती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि केवल अधिकृत उत्पादक ही संबंधित उत्पाद पर जीआई का उपयोग कर सकें। इससे उत्पादों की मौलिकता सुरक्षित रहती है तथा नकली एवं अनुचित उपयोग पर नियंत्रण स्थापित होता है। भारत सरकार ने वर्ष 1999 में “वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक (पंजीकरण एवं संरक्षण) अधिनियम” पारित किया, जिसे सितंबर 2003 से लागू किया गया। इस अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत जीआई की वैधता 10 वर्षों तक रहती है तथा उसके बाद नवीनीकरण आवश्यक होता है। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) जीआई संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए नोडल संस्था के रूप में कार्य करता है। यह विभाग उत्पादकों को पंजीकरण, प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता प्रदान करता है। भौगोलिक संकेतक प्राप्त उत्पादों के निर्यात संवर्धन में कृषि एवं प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), विदेश व्यापार महानिदेशालय तथा निर्यात संवर्धन परिषद जैसी संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये संस्थाएँ उत्पादकों को गुणवत्ता मानकों, विपणन तकनीकों एवं वैश्विक बाजारों की जानकारी उपलब्ध करवाती हैं। सरकार द्वारा विभिन्न व्यापार मेलों, प्रदर्शनी कार्यक्रमों एवं जागरूकता अभियानों का आयोजन कर जीआई उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है। सुंदरजा आम महोत्सव जैसे कार्यक्रम उत्पादों की पहचान एवं बाजार पहुँच को मजबूत बनाने में सहायक हैं। उचित सरकारी सहायता, तकनीकी सहयोग एवं बाजार समर्थन से भविष्य में जीआई प्राप्त फल उत्पाद किसानों की आय वृद्धि तथा भारत की वैश्विक कृषि पहचान को और अधिक सशक्त बना सकते हैं।

जीआई प्राप्त फलों की विशेष स्वाद, सुगंध एवं क्षेत्रीय पहचान के कारण वैश्विक बाजार में मांग लगातार बढ़ रही है। यह व्यवस्था उत्पादकों को विदेशी बाजारों तक पहुँचने में सहायता करती है तथा उपभोक्ताओं के बीच विश्वास स्थापित करती है। हालाँकि निर्यात की सफलता केवल जीआई टैग पर निर्भर नहीं करती, बल्कि गुणवत्ता, पैकेजिंग, मूल्य निर्धारण और उपभोक्ता पसंद जैसे कारक भी महत्वपूर्ण होते हैं।

कृषि एवं प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) जीआई



खासी संतरा

उत्पादों के प्रचार-प्रसार, गुणवत्ता नियंत्रण एवं निर्यात संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संस्था किसानों को प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता, गुणवत्ता मानकों की जानकारी तथा नए बाजारों से जोड़ने का कार्य करती है।

जीआई उत्पादों की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए डिजिटल अनुरेखण प्रणाली, गुणवत्ता परीक्षण एवं आधुनिक पैकेजिंग तकनीकों का उपयोग बढ़ रहा है। साथ ही, ऑनलाइन व्यापार मंच, खुदरा विपणन शृंखलाएँ और डिजिटल माध्यम इनके प्रचार-प्रसार को नई दिशा दे रहे हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित व्यापार मेलों, खरीदार-विक्रेता बैठकों तथा भारतीय दूतावासों के सहयोग से भारतीय जीआई फलों को वैश्विक बाजार में नई पहचान मिल रही है।

चुनौतियों का समाधान

भारत में भौगोलिक संकेतक (जीआई) प्राप्त फलों की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं, किन्तु इनके प्रभावी विकास के मार्ग में कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। सबसे प्रमुख समस्या किसानों एवं उपभोक्ताओं के बीच जीआई के प्रति जागरूकता की कमी है।

अनेक उत्पादक अभी भी इसके आर्थिक, कानूनी एवं विपणन संबंधी लाभों से पूर्णतः परिचित नहीं हैं। इसके समाधान हेतु जागरूकता अभियान, प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

नकली एवं अनाधिकृत उत्पादों का प्रसार भी एक गंभीर चुनौती है। इससे वास्तविक उत्पादों की प्रतिष्ठा प्रभावित होती है तथा उपभोक्ताओं के बीच भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। इस समस्या के समाधान के लिए मजबूत कानूनी संरक्षण, नियमित निगरानी तथा कठोर प्रवर्तन व्यवस्था आवश्यक है, ताकि केवल अधिकृत उत्पादक ही जीआई का उपयोग कर सकें।



इंडी नींबू



सुंदरजा आम

उत्पादों की गुणवत्ता और प्रामाणिकता बनाए रखना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए गुणवत्ता परीक्षण, मानकीकरण, नियमित निरीक्षण तथा सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाना आवश्यक है। जीआई फलों में निर्यात की अपार संभावनाएँ हैं, किन्तु अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक, व्यापार नीतियाँ एवं आयात नियम कई बार बाधा उत्पन्न करते हैं।

इस दिशा में सरकार एवं निर्यात संवर्धन संस्थाओं द्वारा तकनीकी सहायता, बाजार जानकारी और निर्यात सुविधाएँ उपलब्ध करवाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, आर्थिक लाभों का समान वितरण सुनिश्चित करना भी जरूरी है, ताकि छोटे एवं सीमांत किसानों को भी उचित लाभ प्राप्त हो सके। इन चुनौतियों के प्रभावी समाधान से किसानों की आय, ग्रामीण विकास, जैव विविधता संरक्षण तथा भारतीय फलों की वैश्विक पहचान को और अधिक मजबूती मिल सकती है।

सारणी: भौगोलिक संकेतक (जीआई) प्राप्त फलों का प्रथम परीक्षण निर्यात

उत्पाद	राज्य/क्षेत्र	गंतव्य देश
बंगनपल्ली आम	आंध्र प्रदेश	दक्षिण कोरिया
दहानू घोलवड़ चीकू	महाराष्ट्र	ग्रेट ब्रिटेन
मराठवाड़ा केसर आम	महाराष्ट्र	ग्रेट ब्रिटेन
जलगाँव केला	महाराष्ट्र	दुबई
नेंद्रन केला	केरल	सिंगापुर
शाही लीची	बिहार	ग्रेट ब्रिटेन
भागलपुरी जर्दालू आम	बिहार	ग्रेट ब्रिटेन, बहरीन
मखाना	पटना (बिहार)	जापान

सारणी: भारत में भौगोलिक संकेतक (जीआई) प्राप्त फलों का विवरण

फसल	जीआई प्राप्त फल का नाम	राज्य	विशेषता
आम	लक्ष्मण भोग आम	पश्चिम बंगाल	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	खीरसापाती (हिमसागर) आम	पश्चिम बंगाल	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	फजली आम, मालदा	पश्चिम बंगाल	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	मलीहाबादी दशहरी आम	उत्तर प्रदेश	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	ऐपेमिडी आम	कर्नाटक	अचार निर्माण हेतु उपयुक्त
	रत्नागिरी अल्फांसो आम	महाराष्ट्र	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	गिर केसर आम	गुजरात	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	मराठवाड़ा केसर आम	महाराष्ट्र	अधिक गूदा एवं लंबी शेल्फ लाइफ
	बंगनपल्ली आम	आंध्र प्रदेश	मनमोहक स्वाद एवं सुगंध
	जर्दालू आम	बिहार	पतला छिलका एवं सुगंध
	मंखुराड आम	गोवा	विशिष्ट स्थानीय गुणवत्ता
	बनारसी लंगड़ा आम	उत्तर प्रदेश	विशिष्ट स्वाद एवं गुणवत्ता
	रीवा सुन्दरजा आम	मध्य प्रदेश	विशिष्ट स्वाद एवं सुगंध
	कारी इशाद आम	कर्नाटक	विशेष स्वाद
	कुट्टियाटूर आम	केरल	शीघ्र पुष्पण, चिकनी त्वचा एवं हल्की मिठास
	देवगढ़ अल्फांसो आम	महाराष्ट्र	विशिष्ट स्वाद एवं सुगंध
नीबूवर्गीय फल	कूर्ग संतरा	कर्नाटक	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	नागपुर संतरा	महाराष्ट्र	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	अरुणाचल संतरा	अरुणाचल प्रदेश	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	खासी संतरा	मेघालय	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	जालना मौसंबी	महाराष्ट्र	अधिक मिठास एवं रस
	देवनहल्ली चकोतरा	कर्नाटक	गुलाबी गूदा
	कचाई लेमन	मणिपुर	स्वाद, विटामिन एवं रस की अधिकता
	मेमांग नारंग	मेघालय	औषधीय महत्व
	इंडी नीबू	कर्नाटक	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	पुलियांगुड़ी नीबू	तमिलनाडु	अधिक रस एवं अम्लता
केला	नंजनगुड रसबाले केला	कर्नाटक	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
	विरुपाक्षी हिल केला	तमिलनाडु	स्वाद एवं लंबी शेल्फ लाइफ
	सिरुमलाई हिल केला	केरल	स्वाद एवं लंबी शेल्फ लाइफ
	कमलापुर लाल केला	कर्नाटक	औषधीय गुण एवं कम शर्करा
	चेंगलिकोडन नेंद्रन केला	केरल	स्वाद, गुच्छे का आकार एवं फल रंग
	जलगॉंव केला	महाराष्ट्र	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता एवं शेल्फ लाइफ
	कन्याकुमारी मट्टी केला	तमिलनाडु	विशिष्ट मिठास एवं छोटा आकार
	म्यंदोली केला	गोवा	स्थानीय गुणवत्ता एवं पारंपरिक खेती
अंगूर	नासिक अंगूर	महाराष्ट्र	बेरी रंग एवं गुणवत्ता
	बैंगलोर ब्लू अंगूर	कर्नाटक	विशिष्ट फॉक्सी फ्लेवर
	सांगली किशमिश	महाराष्ट्र	उच्च गुणवत्ता
	कुंबम पन्नीर श्राचाई	तमिलनाडु	विशिष्ट स्वाद
अनन्नास	त्रिपुरा क्वीन अनानास	त्रिपुरा	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता

सारणी जारी...

	वाझाकुलम क्वीन अनन्नास	केरल	अधिक मिठास एवं सुगंध
लीची	तेजपुर लीची	असम	आकर्षक फल रंग एवं उत्तम गूदा
	शाही लीची	बिहार	उच्च गुणवत्ता वाला गूदा एवं सुगंध
स्ट्रॉबेरी	महाबलेश्वर स्ट्रॉबेरी	महाराष्ट्र	उत्कृष्ट फल गुणवत्ता
अमरूद	इलाहाबाद सुर्खा अमरूद	उत्तर प्रदेश	गूदे का रंग एवं गुणवत्ता
सीताफल	बीड़ सीताफल	महाराष्ट्र	अधिक मिठास
अंजीर	पुरंदर अंजीर	महाराष्ट्र	आकार, रंग, स्वाद एवं लौह तत्व की अधिकता
अनार	सोलापुर अनार	महाराष्ट्र	उत्कृष्ट गुणवत्ता एवं एंटीऑक्सीडेंट गुण
चीकू	दहानू घोलवड़ चीकू	महाराष्ट्र	विशिष्ट स्वाद
कोकम	सिंधुदुर्ग एवं रत्नागिरी कोकम	महाराष्ट्र	विशिष्ट स्थानीय गुणवत्ता
आँवला	प्रतापगढ़ आँवला	उत्तर प्रदेश	उच्च गुणवत्ता
मखाना	मिथिला मखाना	बिहार	विशिष्ट गुणवत्ता
खुबानी	लद्दाख रक्तसे कार्पो खुबानी	लद्दाख	विशिष्ट स्वाद एवं गुणवत्ता
कटहल	पनरुति कटहल	तमिलनाडु	मीठा स्वाद, सुदृढ़ कोए एवं तीव्र सुगंध

भावी संभावनाएं

भारत में भौगोलिक संकेतक (जीआई) प्राप्त फलों का भविष्य अत्यंत आशाजनक है। जीआई प्रणाली फलों की विशिष्ट पहचान, गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता को स्थापित कर उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में विशेष स्थान प्रदान करती है। इससे उत्पादों की मांग बढ़ने के साथ किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त होने तथा उत्पादन क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति मजबूत होने की संभावना है।

जीआई प्राप्त भारतीय फलों में निर्यात की व्यापक संभावनाएँ हैं। वैश्विक स्तर पर उच्च गुणवत्ता एवं विशिष्ट पहचान वाले उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे भारतीय फलों की अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक

पहुँच आसान हो रही है। इससे विदेशी मुद्रा आय बढ़ने के साथ देश के आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

भौगोलिक संकेतक उपभोक्ताओं के बीच विश्वास स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सुनिश्चित करता है कि उपभोक्ताओं को वास्तविक, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त हों। साथ ही, यह प्रणाली पारंपरिक फल किस्मों, स्थानीय कृषि ज्ञान एवं जैव विविधता के संरक्षण में भी सहायक है, जिससे देसी फल प्रजातियों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण की दृष्टि से भी जीआई महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनेक फल विशेष क्षेत्रों

की परंपराओं और स्थानीय पहचान से जुड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त, कानूनी संरक्षण के माध्यम से उत्पादों के नाम और पहचान के अनाधिकृत उपयोग को रोका जा सकता है। यद्यपि जागरूकता की कमी, गुणवत्ता नियंत्रण, निर्यात बाधाएँ एवं लाभों के असमान वितरण जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी उचित सरकारी सहयोग, प्रभावी नीतियों एवं बाजार सुविधाओं के माध्यम से जीआई प्राप्त फल भविष्य में किसानों की आय, ग्रामीण विकास तथा भारतीय कृषि की वैश्विक पहचान को नई मजबूती प्रदान कर सकते हैं।



केला प्रजाति सिरूमलाई हिल

केला प्रजाति चैंगलिकोडन नेंद्रन

निवेदन

लेखक बंधु फल फूल पत्रिका के लिए अपने लेख और संबंधित फोटो, कवरिंग लैटर के साथ सिर्फ निम्न पोर्टल पर ही अपने मोबाइल नम्बर के साथ भेजें। ध्यान रखें कि फोटो मौलिक होने के साथ जेपीजे फॉर्मेट में और उच्च रेजोल्यूशन की हों। लेख में अधिकतम 1200 शब्दों की संख्या रखने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त सुझाव और प्रतिक्रियाएँ भी भेज सकते हैं। लेख भेजने के लिए कृपया कृतिदेव 010 टाइप फेस का प्रयोग करें।

हमारा पोर्टल है :
epatrika.icar.org.in

—संपादक